Bhagirathi bal shiksha sadan
Class_7
Sub hindi

आत्मत्राण –

विपदाओं से मुझे बचाओ,
यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो
(करुणामय)
कभी न विपदा में पाऊँ
भय।

दुख ताप से व्यथित चित्त
को न दो सांत्वना नहीं
सही
पर इतना होवे
(करुणामय)
दुख को मैं कर सकूँ सदा
जय।

कोई कहीं सहायक न
मिले
तो अपना बल पौरुष न
हिले;
हानि उठानी पड़े जगत में
लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ
क्षय।

Scanned with CamScanner

मेरा त्राण करो अनुदिन तुम
यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे (करुणामय)
तरने की हो शक्ति अनामय।

मेरा भार अगर लघु करके न
दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय
वहन कर सकूँ इसको
निर्भय।

नव शिर होकर सुख के दिन
में
तव मुह पहचानूँ छिन-छिन
में।
दुख रात्रि में करे वंचना मेरी
जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणामय
तुम पर करूँ नहीं कुछ
संशय।

Scanned with CamScanner

Bhagirathi bal shiksha sadan

school

Class 7th

Subject hindi

आत्मत्राण कविता का सार – प्रस्तुत कविता महाकवि रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा बांग्ला में लिखी गई थी। इसका हिन्दी में अनुवाद आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने किया। प्रस्तुत कविता में कवि ने इस बात का वर्णन किया है कि ईश्वर केवल उनकी सहायता करते हैं, जो खुद अपनी सहायता करने की कोशिश करते हैं। जो मुसीबतों का सामना करते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, उन्हें ही जीवन के संघर्ष में जीत मिलती है।

Scanned with CamScanner

Bhagirathi bal shiksha sadan

school

Class 7th

Subject hindi

अर्थात अगर आप बिना कुछ किये ये चाहें कि भगवान आपकी मुसीबतों को ख़त्म कर दें और आपको कभी कोई दुःख ना मिले, तो स्वयं भगवान भी आपके लिए कुछ नहीं करेंगे। आपको ईश्वर पर भरोसा रखते हुए, हमेशा अपनी मुसीबतों का सामना खुद से ही करना पड़ेगा, तभी ईश्वर आपको आत्मबल एवं शक्ति प्रदान करेंगे। जिससे आप तमाम मुसीबतों व कष्टों के बावजूद भी अंत में विजयी हो जाओगे और मुश्किलों के आगे कभी घुटने नहीं टेकोगे।

Scanned with CamScanner

शब्दार्थ

विपदा - विपत्ति, मुसीबत
करुणामय - दूसरों पर दया करने वाला
दुःख-ताप - कष्ट की पीड़ा
व्यथित - दुःखी
चित्त - मन
सांत्वना - दिलासा
सहायक - मददगार
पौरुष - पराक्रम
वंचना - वंचित
क्षय – नाश

त्राण - भय निवारण, बचाव
अनुदिन - प्रतिदिन
तरने - पार करना

अनामय - रोग रहित
लघु - कम
सांत्वना - हौसला, तसली देना
अनुनय- - विनय
वहन - सामना करना
निर्भय - बिना डर के
नत शिर - सिर झुका कर
दुःख-रात्रि - दुःख से भरी रात
निखिल - सम्पूर्ण
संशय – संदेह

Scanned with CamScanner

Hindi worksheet

प्रश्न 1- आत्मत्राण कविता के रचनाकार कौन है?

प्रश्न 2- ईश्वर को क्या कह कर संबोधित किया है?

प्रश्न 3- कवि विपदा से बचाने की प्रार्थना भगवान से क्यों नहीं करता?

प्रश्न 4- कवि प्रभु से कौन सी शक्ति चाहता है?

प्रश्न 5 - कोई सहायक ना मिलने पर कवि क्या चाहता है?

प्रश्न 6- कवि ईश्वर से स्वस्थ रहने की प्रार्थना क्यों कर रहा है?

प्रश्न 7- कवि दुख की स्थिति आने पर ईश्वर से क्या प्रार्थना करता है?

प्रश्न 8- कवि ईश्वर से स्वस्थ रहने की प्रार्थना क्यों कर रहा है?

प्रश्न 9- कवि सुख के दिनों में क्या चाहता है?

प्रश्न 10- आत्मत्राण कविता की प्रार्थना अन्य प्रार्थना गीतों से अलग कैसे है?

Scanned with CamScanner

Write it down in your copy

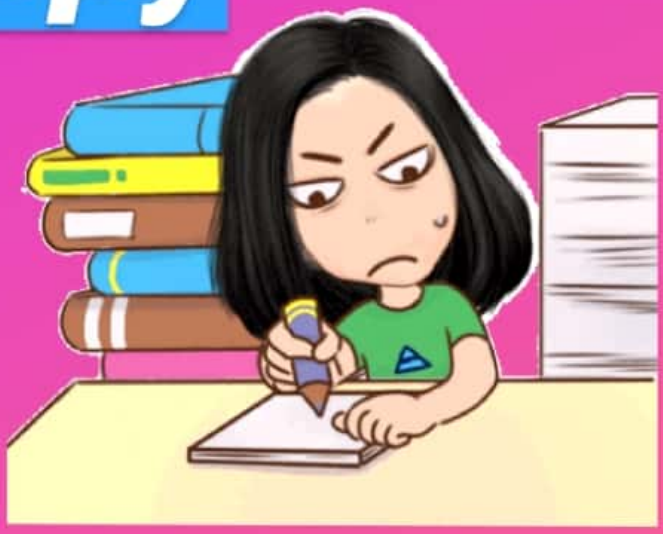

निम्नलिखित अंशों के भाव स्पष्ट कीजिए -

(1) नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।

(2) हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना

3) तरने की हो शक्ति
अनामय।
मेरा भार अगर लघु
करके न दो सांत्वना
नहीं सही।

Scanned with CamScanner